पाठ–3

हेलन केलर

–संकलित

आम तौर पर देखा गया है कि भिन्न क्षमताओं वाले बच्चे या युवा अपने जीवन से निराश होकर अकर्मण्य हो जाते हैं किन्तु विश्व इतिहास में ऐसे भी उदाहरण मिल जाएँगें जहाँ भिन्न क्षमताओं वाले बच्चों ने सामान्य बच्चों की अपेक्षा अधिक क्षमता से न केवल सामान्य जीवन जिया वरन् महान कार्य भी किए। अमेरिका की एक दृष्टि विहीन–बधिर दिव्यांग महिला, हेलन केलर ऐसी ही महान् विभूति थी। उन्होंने अपने कठोर श्रम, दृढ़ इच्छा शक्ति से वे असाधारण कार्य किए जो दो आँखें और दो कान रखने वाले करोड़ों लोग नहीं कर पाए। आइए इस पाठ में हम उस कर्मठ महिला का जीवन परिचय पढ़ें।

अमेरिका की सुप्रसिद्ध महिला, हेलन केलर का जन्म 27 जून, सन् 1880 में हुआ था। अंधी और बहरी होते हुए भी इस महिला ने उच्च शिक्षा प्राप्त की और फिर दीनदुखियों की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर दिया। आज इस महिला को सारा संसार जानता है। हेलन जन्म से तो अंधी, गूँगी और बहरी नहीं थी, डेढ़ वर्ष की अवस्था तक वह भी दूसरे बच्चों की तरह देख–सुन सकती थी। कुछ–कुछ तुतलाकर बोलनेभी लगी थी, पर वह अकस्मात्बीमार होगई। बीमारी सेतोउसकी जान बच गई, पर आँख, कान और वाणी वह सदा के लिए खो बैठी।

हेलन अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमती थी। उसमें विलक्षण प्रतिभा थी, पर बेचारी अपने अनुभवों को प्रकट करने में बिल्कुल असमर्थ थी। उसे अपनी असमर्थता पर बड़ी झुँझलाहट होती थी। कभी–कभी वह अपने छोटे भाई–बहिनों को बुरी तरह मार बैठती थी या फिर दुखी होकर अपने आपको ही किसी–न–किसी तरह दंड दिया करती थी।

हेलन का दुख उसके माता–पिता से नहीं देखा गया। उन्होंने काफी सोच–विचार के बाद उसे अंधे–बहरों के स्कूल में भर्ती कराने का निश्चय किया। दैवयोग से बोस्टन की अंध–बधिर शाला में सलीवन नाम की एक योग्य अध्यापिका उन्हें मिल गई। सलीवन बहुत ही संवेदनशील थी'। उन्होंने खुद भी अंधेपन का दुख भोगा था और आपरेशन के बाद कुछ दिनों पहले ही दृष्टि प्राप्त की थी। इसलिए वे हेलन के दुख को समझ सकती थीं। उन्होंने उसकी देख–रेख और शिक्षा का भार सहर्ष अपने कंधों पर ले लिया और हेलन के दुखों को दूर करने का उपाय सोचने लगीं, पर हेलन को समझाने और उसके मन की बात समझने का कोई उपाय उन्हें नज़र नहीं आया। इससे सलीवन को बड़ी निराशा हुई। जिस दायित्व को उन्होंने स्वीकार किया था, उसे पूरा करने का वे सदा प्रयत्न करती रहीं।

हेलन को अपनी गुड़िया बहुत प्यारी थी। वह उससे पल भर भी जुदा नहीं होना चाहती थी। सलीवन ने एक दिन हेलन की हथेली पर उँगली से डॉल (गुड़िया) शब्द लिखा। हेलन को उँगलियों का यह खेल बड़ा पसंद आया। वह फौरन अपनी माँ के पास गई। उसने वैसा ही डॉल (गुड़िया) शब्द लिखा। यह देखकर हेलन की शिक्षिका फूली न समाई। उन्हें जिस उपाय की खोज थी वह आज अनायास ही मिल गया। अब सलीवन उसे नित नए शब्द सिखाने लगीं। हेलन ज्यों–ज्यों नए शब्द सीखती, त्यों–त्यों अधिक सीखने की उसकी जिज्ञासा बढ़ती जाती। वह अपने संपर्क में आनेवाली हर एक

चीज़ का नाम जान लेना चाहती थी। हेलन ने उन दिनों का वर्णन करते हुए अपनी आत्मकथा में लिखा है–''ज्यों-ज्यों मैं सीखती जा रही थी, दुनिया, जिसमें मैं रहती थी, मुझे अधिक सुखमय और आकर्षक नज़र आती जा रही थी।''

धीरे-धीरे सलीवन ने हेलन को अंध लिपि (ब्रेल) भी सिखा दी। अब क्या था ? हेलन ने अपना सारा समय लिखित साहित्य को पढ़ने में लगा दिया। वह खाना-पीना भूलकर रात-दिन इस लिपि में लिखे साहित्य को पढ़ा करती। दैवयोग से एक दिन उसकी वाचा भी खुल गई। एक दिन यकायक उसके मुँह से कुछ टूटे-फूटे शब्द निकल पड़े जिसका आशय था 'आज बड़ी गर्मी है।' हेलन की वाणी सुनकर अन्य लोगों को तो प्रसन्नता हुई ही, पर हेलन के जीवन का वह सबसे सुखी दिन था। हेलन ने इसका उल्लेख भी अपनी जीवनी में किया है। वह लिखती है–''उस दिन मेरे हृदय में जितना आनंद और उल्लास उमड़ा, उतना शायद ही किसी बालक के जीवन में कभी उमड़ा हो।''

इस अध्ययनशील बालिका ने घर की पढ़ाई पूरी करके अपनी शिक्षिका की सहायता से कैम्ब्रिज स्कूल में प्रवेश किया। आश्चर्य की बात है कि स्कूल की पढ़ाई करने के अलावा उसने केवल दो वर्ष में ही अँग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच भाषाओं पर भी अच्छा काबू पा लिया। स्कूल की पढ़ाई पूरी करके हेलन ने कॉलेज में प्रवेश किया। कॉलेज में भी उसने कठिन परिश्रम किया और सन् 1904 में बी. ए. की परीक्षा पास कर ली। उल्लेखनीय बात यह है कि परीक्षा में हेलन प्रथम श्रेणी में पास हुई। पढ़ाई पूरी करके हेलन ने लिखना शुरू किया। ब्रेल लिपि में उसने 'मेरी आत्मकथा' आदि एक के बाद एक पूरी नौ पुस्तकें लिखीं। ये पुस्तकें विश्व-साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

हेलन को प्रकृति से बड़ा प्रेम था। यद्यपि वह वसंत के खिले फूलों को और लहरों पर थिरकती चाँदनी को देख नहीं सकती थी पर उनका मन-ही-मन अनुभव अवश्य करती थी। प्रकृति उसे कैसी लगती है और उसका उसके अंतर्मन पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका उसने अपनी पुस्तकों में विस्तार से उल्लेख किया है। हेलन को नाव खेने, तैरने और घुड़सवारी करने का भी शौक था। वह शतरंज और ताश भी खेल लेती थी। एक बार यौवनकाल में हेलन ने विवाह करने और घर-गृहस्थी बसाने का विचार किया था, पर शीघ्र ही उसे अपनी भूल मालूम हो गई और विवाह का विचार त्यागकर उसने अपने आपको समाज-सेवा के काम में लगा दिया।

सबसे पहले उसने अनाथालय के अंधे-बहरे बच्चों की सेवा करने का काम शुरू किया। फिर 'मिल्टन अंध सोसाइटी' नामक एक संस्था कायम करके अंधे विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लिपि में उपयोगी साहित्य प्रकाशित करने की व्यवस्था की।

इसके पश्चात् हेलन ने विश्व-यात्रा प्रारंभ की। पहले उसने यूरोप की यात्रा की, फिर वह आस्ट्रेलिया, कनाडा, मिस्र, जापान, दक्षिणी अफ्रीका, भारत इत्यादि देशों में घूमी। उसकी यात्रा का एकमात्र उद्देश्य था, विभिन्न देशों के अंधे-बहरे लोगों के जीवन में आशा और उत्साह का संचार करना। वह इस पवित्र उद्देश्य को लेकर जहाँ कहीं गई, उसका यथेष्ट आदर हुआ। उसकी

सेवाओं से आज सारा संसार उसके चरणों में श्रद्धानत है । एक अंधी–बहरी महिला इतना सब कर सकती है, यह बात आसानी से समझ में नहीं आती, पर जैसा कि किसी ने कहा है–'सत्य घटनाएँ कल्पित किस्सों से अधिक आश्चर्यजनक होती हैं ।' यह बात हेलन के जीवन पर हू–ब–हू लागू होती है ।

टीप–ब्रेल लिपि– ब्रेल लिपि दृष्टिहीनों को शिक्षा देने के लिए बनाई गई वह विशेष लिपि है जिसमें मोटे कागज़ पर सूजे से छेदकर ध्वनिसूचक बिंदियाँ बनाई जाती हैं । पलटकर उन उभरी हुई बिंदियों को उँगलियों के स्पर्श से पढ़ा जाता है । इसका आविष्कार लुई ब्रेल ने किया था।

शब्दार्थ – सुप्रसिद्ध – मशहूर, विख्यात, **अर्पित करना** – देना, **विलक्षण** –विशेष लक्षण से मुक्त, **प्रतिभा** – विलक्षण बुद्धि, **बोस्टन** – अमेरिका का स्थान, **अनायास** – बेवजह, **जिज्ञासा** – जानने की इच्छा, **फौरन** – तुरन्त, **दैवयोग** – देवताओं की कृपा से, **यकायक** – अकस्मात्, **उल्लास** –प्रसन्नता, आनन्द, **परिश्रम** – मेहनत, **यथेष्ट** – जितना चाहिए उतना, काफी।

अभ्यास

पाठ से

1. हेलन केलर कौन थी?
2. हेलन केलर ने अपनी पढ़ाई किस विद्यालय से प्रारंभ की थी एवं उन्होंने किस कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की?
3. सलीवन हेलन के दुःख को क्यों समझ सकती थी?
4. सलीवन ने हेलन के मन की निराशा को कैसे दूर किया?
5. सलीवन की प्रेरणा से क्या सीख/शिक्षा मिलती है?
6. हेलन के जीवन का सबसे सुखी दिन कौन सा था?
7. विशिष्ट क्षमता हासिल करने के बाद अपने सुखद अनुभवों के बारे में हेलन ने अपनी जीवनी में क्या लिखा?
8. हेलन ने समाज सेवा के कौन से कार्य किए?
9. सलीवन ने हेलन को शब्द लिखना कैसे सिखाया?
10. ब्रेल लिपि क्या है?
11. पढ़ाई के अलावा हेलन के कौन–कौन से शौक थे? उसका किन–किन भाषाओं पर अधिकार था?
12. हेलन केलर ने दिव्यागों की सेवा के लिए किस सोसायटी की स्थापना की? इसकी स्थापना के उद्देश्य क्या थे?
13. हेलन का जीवन शारीरिक रूप से बाधित लोगों को क्या प्रेरणा देता है?
14. हेलन झुंझलाहट में क्या करती थी?
15. 'ज्यों–ज्यों मैं सीखती जा रही थी, दुनिया, जिसमें मैं रहती थी, मुझे अधिक सुखमय और आकर्षक नजर आती जा रही थी'। हेलन के इस कथन का क्या आशय है?
16. 'सत्य घटनाएँ कल्पित किस्सों से अधिक आश्चर्यजनक होती हैं।' इसका क्या आशय है?

पाठ से आगे

1. यदि हेलन स्वयं पर ईश्वर का प्रकोप मानकर निष्क्रिय पड़ी रहती तो क्या होता? सोचकर लिखिए।
2. शारीरिक रूप से अक्षम लोगों के लिए क्या–क्या सुविधाएँ होनी चाहिए?
3. शारीरिक रूप से बाधित लोग सहानुभूति के पात्र होते हैं या समान अवसर पाने के? अपने विचार लिखिए।
4. हेलन के सफल होने में उसकी शिक्षिका सलीवान की महत्वपूर्ण भूमिका थी? अगर सलीवान न होती तो क्या हेलन वो सब कर पाती जो उसने किया?
5. 'आत्मविश्वास और सच्ची लगन से जो कार्य प्रारंभ किया जाता है, उसमें व्यक्ति को अवश्य सफलता मिलती है।' हेलन के जीवन को दृष्टि में रखते हुए इस कथन को सिद्ध कीजिए।

भाषा से

1. दिए गए उपर्युक्त कारक चिह्नों को खाली स्थानों में भरिए –
   (पर, को, ने, के, का)
   क. हेलन .....अपनी गुड़िया बहुत प्रिय थी।
   ख. सलीवन .....हेलन की हथेली पर ऊँगली से डॉल (गुड़िया) शब्द लिखा।
   ग. हेलन .....ऊँगलियों .....यह खेल बहुत पसंद आया। वह फौरन अपनी माँ .....पास गई।
   घ. धीरे–धीरे सलीवन .....हेलन .....ब्रेल लिपि सिखा दी।
   ङ हेलन को नाव खेने, घोड़े .....सवारी करने .....भी शौक था।
2. पाठ में ज्यों का त्यों, किसी न किसी, हू–ब–हू, मन–ही–मन आदि शब्द आए है। इन शब्दों के अर्थ ज्ञात कर इनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।
3. (i) मैंने किताब माँग कर पढ़ी ।
   (ii) उसकी माँग में सिंदूर था।
   (i) सम संख्याओं का योग हमेशा सम संख्या ही होती है।
   (ii) योग करने से शरीर स्वस्थ रहता है।
   (i) नीचे दिए गए सवालों को हल करो।
   (ii) किसान हल से खेत जोतते है।

   ऊपर दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द 'मांग' 'योग' और 'हल', अलग–अलग वाक्यों में भिन्न अर्थ प्रकट कर रहे हैं। जब कोई शब्द, एक से अधिक अर्थ प्रकट करता है तो वह 'अनेकार्थक' या 'अनेकार्थी' शब्द कहलाता है। नीचे कुछ अनेकार्थी शब्द दिए गए हैं। उनका अपने शब्दों में प्रयोग कीजिए–

   (1) अंक (2) काल (3) गति (4) वर्ण

   (5) कर (6) धन (7) खर (8) कनक

   (9) घट (10) उत्तर (11) आम (12) गुरू

4. भाषा का शुद्ध लेखन उसके शुद्ध उच्चारण पर निर्भर करता है। इसलिए भाषा के शुद्ध उच्चारण पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। नीचे कुछ त्रुटियाँ और उनके शुद्ध रूप दिए जा रहे हैं–

अशुद्ध		शुद्ध
कांच	–	काँच
मुनी	–	मुनि
पुर्ण	–	पूर्ण
घन्टा	–	घण्टा

अब आप नीचे लिखे शब्दों की वर्तनी को शुद्ध करके लिखिए।

हस्ताक्षेप, बिमारी, लहु, एनक, हिरन, कँगन, विस्वास, छुद्र, ग्रहस्थ, आर्शीवाद।

5. निम्नलिखित शब्दों के पयार्यवाची लिखिए –

रात, दिन, माता, फूल, ईश्वर।

योग्यता विस्तार

1. शारीरिक रूप से बाधित कई प्रसिद्ध कवि, लेखक, कलाकार और वैज्ञानिक हुए हैं। शिक्षक की सहायता से उनकी जीवनियाँ खोज कर पढ़िए।
2. लुई ब्रेल का जीवन परिचय खोज कर पढ़िए।
3. अपनी आँखो पर पट्टी बांधकर किसी अपरिचित वस्तु को छूकर उसे पहचानने का प्रयास कीजिए एवं उसके आकार, प्रकार के विषय में लिखिए।
4. कल्पना कीजिए की एक नेत्रहीन व्यक्ति के लिए दुनिया का स्वरूप कैसा होगा? अपने विचार लिखिए।

2FDRSI